IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामायण कालीन समाज की संरचना

डॉ0 पवन कुमार झा
आनन्द किशोरी नगर
लक्ष्मीसागर,दरभंगा
बिहार –846009

रामायण में प्रमुख रूप से तीन प्रकार की जातियों का उल्लेख है – नर, वानर तथा राक्षस। इन तीनों जातियों के विषय में दो दृष्टिकोण है। प्रथम दृष्टिकोण अध्यात्मिक है, जिसमें रामचन्द्र जी सच्चिदान्द परब्रह्म है, राक्षस षड्विकार है और वानर जाति चंचल मनोवृति है।

दूसरा दृष्टिकोण अधिभौतिक है इसके अनुसार नर सामान्य रूप से मनुष्य ही माने गए हैं। राक्षस कराल दाँत वाले, भयंकर आकृतिवाले तथा वानरों को सामान्य पषु लंबी पूछवाला बन्दर कहा गया।

वस्तुतः नर, वानर और राक्षसों के विषय में रामायण में वर्णित है कि ये सभी मनुष्य ही थे। मनुष्यों की भॉति उनके संस्कार होते थे, वे वेदों के ज्ञाता होते थे, उनका राज्याभिषेक यज्ञों के सम्पादन से ही होता था। वे सन्ध्योपासना करते थे। उनकी राज्य व्यवस्था थी। वे संस्कृत भाषा के ज्ञाता थे, संस्कृत में वार्तालाप करते थे। वस्त्राभूषण से अलंकृत रहते थे।

नर वानर और राक्षस के अतिरिक्त रामायण कालीन समाज के अन्य घटक सुर,असुर, किन्नर,गन्धर्व विद्याधर, ऋक्ष, रोहित,आमीर, पल्लव, मलेच्छ, शक भवन किरात आदि भी थे।

रामायण कालीन समाज गुणानुसार एवं कर्मानुसार विभक्त उपर्युक्त विभिन्न प्रकार की जातियॉ से युक्त मनुष्यों का ही समाज था। मनुष्य ही अपने आचरणों एवं प्रवृतियों के कारण वानर राक्षस आदि कहलाए। रामायणकालीन समाज में वर्ण व्यवस्था भी जो चार वर्णो में ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैष्य एवं शुद्र में विभाजित था। समाज में वर्ण व्यवस्था के साथ –साथ आश्रम व्यवस्था भी थी।

आश्रम व्यवस्था चार प्रकारों में विभाजित थी। ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास । जिसमें प्रत्येक आश्रम व्यवस्था के लिए समय निर्धारित था तदनुसार कर्तव्य करना पड़ता था। इन सभी में गृहस्थाश्रम को श्रेष्ठ कहा गया है। रामायण कालीन समाज में सभ्यता एवं सस्कृति विकसित और उन्नत थी। नैतिक नियमों एवं आदर्शो से युक्त भौतिक आदर्ष भी पूर्णतः उच्च थे। नगरीय योजना उच्च कोटी की थी।

महिलाओं को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था।

राजा प्रजा के हितों का ध्यान रखता था। न्यायप्रियता का उत्कृष्ट उदाहरण रामायण में देखने की मिलता है।

निष्कर्षत : यह कहा जा सकता है कि समाज, सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से समुन्नत थी।